॥ श्री गुरु शरणम् ॥

★ जीवन झांकी ★

(अर्थात्)

श्री १०८ श्री परमहंस स्वामी परमानन्द जी महाराज का संक्षिप्त जीवन

लेखक :-

नन्द किशोर "मोरपंख वाला"

पहली बार १००० मूल्य श्रद्धा प्रेम

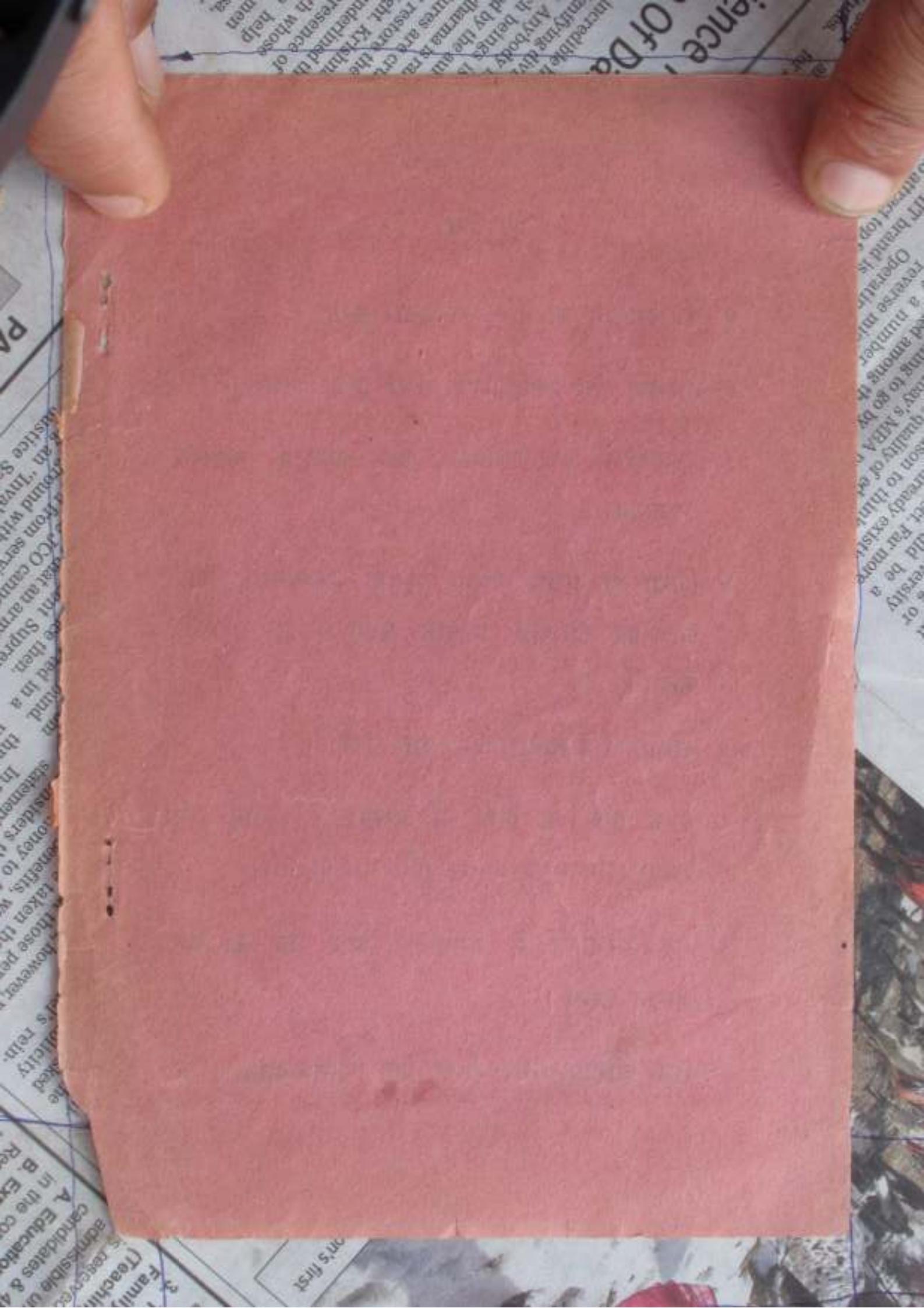

ब्रह्मीभूत् श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज
संस्थापक श्री भगवद्भक्ति आश्रम, रामपुरा, रेवाड़ी

विघ्न नि

पारवती के पुत्र

एक दन्त दूजे सून्

धाना के प्रभु दा

आनन्द मानन्द

योगीन्द्र सेव्यं भ

मेरे नाथ अमल

हरिद्वार जावां

येह जल हर

जब दे

कांशी जी

भार

असी कोस में

सिंह

घोटेंगे

भर

आकड़ा

विघ्न निवारण तुम हो गणेशा ॥ टेक ॥
पारवती के पुत्र कहावो शिव की पुरी के तुमहो नरेशा ॥
एक दन्त दूजे सुन्ड विराजे मुसे से वाहन गल विचशेषा ॥
धाना के प्रभु दास दमोदर जयशिव जयशिव जजशिव
उज्वल वेषा ॥

आनन्द मानन्द करे प्रसन्न ज्ञान स्वरूप निजवोध रूपम् ।
योगीन्द्र सेव्यं भव रोग वैद्यं श्री मद्गुरु नित्यमहं नमामि ॥

मेरे नाथ अमली बगिया में भंगिया घुटाय राखू जी ।
हरिद्वार जावां शीश नवांवा गंगा जल लावां ॥
वोह जल हर के शीश चढ़ावां नाथ मगन हो जांय,
वो तो करेंगे निहाल ।
जब देखू तब झाड़ खण्ड में तेरा ही दरबार ॥
कांशी जी में केशर वोवां चन्दन प्रयाग ।
भार खण्ड में विजया वोवां धतूरा दरबार ॥
असी कोस में झाड़ी लागे जंगल बीच उजार ।
सिंह बघेरे हस्ती बोले भैरों की किलकार ॥
वोटेंगे नन्देश्वर छानेंगे गनेश ।
भर प्याले दे पारवती पीवेंगे महेश ॥
आकड़ा दी रोटो पोवां धतूरा रो साग ।
सखियां रो छोंक लगावें जीमो भोला नाथ ॥

जब से मुझे

महारा

विशे

श्री

यदि इसमें

क्षमा करें।

❀ श्री सद्गुरवे नमः ❀

★ भूमिका ★

जब से मुझे परम पूज्य श्री १०८ श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज के दर्शन हुए हैं, उस समय की विशेष घटनाएँ जो उनके जीवन की हैं। और जो मैंने स्वयं अनुभव की हैं, या दूसरे भक्तजनों द्वारा सुनी हैं, लिखने का प्रयत्न कर रहा हूँ। यद्यपि यह यत्न सूर्य को जुगनू दिखाने के समान है, फिर भी अपनी भावनाओं के पुष्प श्री गुरु देव के चरणों में अर्पण करके. स्वयं मुझे तो सन्तोष मिलेगा ही संभव है भक्तजन और सत्संगीवर्ग को भी बहुत लाभ हो जावे।

यदि इसमें कुछ अशुद्धियां रह गई हों उन्हें पाठकगण क्षमा करें।

मोर पंखवाला

पहले जब मैं भटिन्डे में ज्यादा रहता था। उस समय हम दादरी में सीमेंट फैक्ट्री लगा रहे थे। जीन्द स्टेट से (Agreement) एग्रीमेन्ट होचुका था। दादरी में ज़मीन ले ली गई थी। उसी सिलसिले में, जीन्द के चीफ मिनिस्टर साहब ने मुझे संगरूर बुलाया था। उसी समय श्री १०८श्री महाराजजी के दर्शन प्रथम ही बार सन् १९१२में स. हरचंद सिंह जी के बाग संगरूर में हुए। उनके उपदेश का कुछ ऐसा प्रभाव हुआ कि व्यापार की सब बातें भूलकर मैं वहां तीन दिन रहा। चौथे दिन श्री महाराज जी की आज्ञा पाकर मैं भटिन्डा वापस आया। भटिन्डे में हम उस समय गौ सेवा कार्य भी कर रहे थे। मेरे सहयोगी एक कार्य-कर्त्ता को मैंने पत्र लिखा। वह संगरूर गये। वहां जाकर उन्होंने श्री महाराज जी के दर्शन किये। उनके सत्संग से वे भी प्रभावित हुए। वे अनुनय विनय करके श्री महाराजजी को हरिद्वार ले गये। वहां से श्री महाराजजी नरेला आगये। उस समय मैं दिल्ली था। जब मैंने सुना कि श्री महाराज जी नरेला आये हुए हैं, मैं भी नरेला चला गया। वहां पर मैंने एक छोटी सी बगीची में उनके दर्शन किये। उसी समय श्री महाराज जी ने सिद्धि भवानी बनवाई। स्वयं पी कर

मुझ से भी कहा, "भक्तजी पी लो"। मैंने कहा कि पहले मैं पीता था परन्तु अब मैंने छोड़ दी है। श्री गुरुदेव के दुबारा कहने पर मैंने थोड़ी सी पी ली, क्योंकि उनके प्रति मेरी श्रद्धा हो चुकी थी। उस दिन सत्संग में बहुत आनन्द रहा। दूसरे दिन श्री महाराज जी के साथ मैं भी दिल्ली आगया। वहां से दादरी चला गया। इसके पीछे जब मुझे पता लगा कि श्री महाराज जी पालम में ठहरे हैं। मैंने पालम जाकर उनके दर्शन और सत्संग किया। वहां से फिर दिल्ली चला गया। इस तरह कभी जीन्द कभी पालम जाकर दर्शन और सत्संग करता रहा।

एक बार श्री महाराज जी जीन्द ठहरे हुए थे। मैं ला. रामजीदास को साथ लेकर जीन्द आया। चार दिन बहुत अच्छी प्रकार से बनखण्डी में सत्संग होता रहा। जिस दिन हम लोग भटिण्डा आने के लिये तैयार हुए कि आज बारह बजे चलेंगे। उस दिन ऐसा सत्संग हुआ कि ला. रामजीदास ने कहा कि १२ बज गये होंगे, चलना चाहिये। जब घड़ी देखी तो चार बज चुके थे। श्री महाराज जी का सत्संग ऐसा आनन्द दायक होता था कि सत्संगियों को समय का भी पता नहीं लगता था। वहां पर कुछ दिन और ठहर कर हम लोग भटिन्डा आगये। यहां आ कर ला. रामजीदास ने तजवीज़ की कि श्री महाराज जी

को भटिन्डा ही लाना चाहिये। उन्हें भटिन्डे लाने के लिये उसी मेरे पूर्व परिचित सहयोगी कार्यकर्त्ता को जीन्द भेजा उसने जीन्द जाकर श्री महाराज जी से भटिन्डा आने की प्रार्थना की। श्री महाराज जी उसी को साथ लेकर रामराय चले गये। वहां पर एक दो दिन ठहर कर श्री महाराज जी वापिस जीन्द ही चले आये और श्री महाराज जी ने फरमाया कि दिल्ली और हांसी होते हुए भटिन्डा चलेंगे। हांसी जाने के लिये श्री महाराज जी स्टेशन पर आकर ट्रेन में बैठ गये। जब गाड़ी गढ़ीहरसरु के स्टेशन पर पहुंची तो उसी कार्य कर्त्ता ने राव बलबीर सिंह जी को देखा। उन से कहा आवो आप को एक बड़े महात्मा के दर्शन करवावूं। राव साहबने उसी समय ट्रेन में ही आकर श्री महाराज जी के दर्शन किये। प्रणाम कर के वहां ही बैठ गये। रेवाड़ी तक उन्हें श्री महाराज जी के सत्संग का लाभ हुवा। रेवाड़ी स्टेशन पर उन्हों ने श्री महाराज जी से प्रार्थना की कि आप आज रामपुरा(रेवाड़ी) चलकर मेरे मकान को पवित्र कीजिये। प्रार्थना स्वीकार कर के श्री महाराज जी रामपुरा चले गये। श्री महाराज जी की आज्ञा से सिद्धि भवानी बनने लगी। थोड़ी ही देर में श्री महाराज जी का उपदेश आरम्भ हो गया। राव साहाव

भी आकर बैठ गये। शाम तक उपदेश होता रहा। राव साहब को श्रद्धा हो गई। वहां से प्रातः काल ही श्री महाराज जी हांसी आये। हांसी के स्टेशन पर उतर कर श्री महाराज जी वहां के एक तालाब पर सीधे पहुंचे। तालाब पर पांच सात सत्संगी बैठे हुये थे और महात्मा चेतराम जी यह निश्चय कर चुके थे कि यदि आज सूर्यास्त तक श्री महाराज जी के दर्शन नहीं हुए तो, मैं अग्नी में जलकर मर जाऊंगा। श्री महाराज जी के वहां पहुंचते ही सब को बड़ी प्रसन्नता हुई। इस से पता लगता है कि श्री महाराज जी कैसे सिद्ध योगी थे। वहां थोड़ा देर ठहर कर श्री महाराज जी भटिन्डा आ गये। यहां पर श्री महाराज जी गोशाला के ऊपर कमरे में १०, ११ दिन ठहरे। सत्संगी बहुत आने लगे और खूब सत्संग होने लगा। उसी कार्य कर्त्ता के आग्रह से श्री महाराज हरिद्वार चले गये।

गरमी का मौसम होने के कारण श्री महाराज जी जी हरिद्वार ही ठहरे।

राव साहब को श्री महाराज जी की बड़ी श्रद्धा होगई थी। वे, छाजू राम धारूहेड़ा वाले और महाशय दिलीप सिंह, इन दोनों को साथ ले कर हरिद्वार पहुंचे। वहां जा

कर उन्होंने श्री महाराज जी के दर्शन, और सत्संग किया। रामपुरा ले जाने के लिए श्री महाराज जी से प्रार्थना की । सुनने में ऐसा आया है, कि श्री महाराज जी ने राव बलवीर सिंह जी से उस समय कुछ वचन लेकर रामपुरा (रेवाड़ी) जाना स्वीकार किया। श्री महाराज जी रामपुरा आगये, और राव साहब के यहां ठहरे।

मुझे जब पता लगा कि श्री महाराज जी रामपुरा आये हुए हैं तो मैं भी दर्शनों के लिये रामपुरा आ गया। वहां बहुत सत्संग हुवा। दूसरे दिन प्रातः काल ही श्री महाराज जी ने मेरे से कहा कि, "हमने राम जोहड़ी पर एक जगह देखी है भक्त, उसे तू भी देखकर आना, और साथ ही उस में स्नान भी कर आना"। मेरे साथ एक और भक्त फूल चन्द जी भी थे। हम दोनों ने जोहड़ी के आस पास का सब स्थान देखा और उसमें स्नान कर के वापिस रामपुरा आ गये। वहां लौट कर मैंने श्री महाराज जी से दादरी चलने की प्रार्थना की। इस प्रार्थना पर श्री महाराज जी दादरी पधारे। वहां तीन चार दिन ठहर कर, मेरे पिता जी को, अपनी जमीन में आश्रम तथा मकान बनाने के लिये आज्ञा देकर, पालम चले गये। रामपुरा में, राव साहब को राम जोहड़ी पर मकान

बनाने के लिये भी आज्ञा दे आये थे। जोहड़ी का मकान जब तैयार हो गया तब श्री महाराज जी को रामपुरा ले आये। राम जोहड़ी (जहांपर अब भगवद्भक्ति आश्रम बना हुआ है) पर ही, जहां मकान बनाया गया था, वहां पर ही श्री महाराज जी ठहरे। देहली से मैं ला० मथुरा प्रशाद जी को साथ ले कर दर्शन कराने के लिमे रामपुरा आया। वहां मालूम हुवा कि श्री महाराज जी धारूहेड़ा गये हैं। उसी समय हम दोनों एक बहल (सवारी) ले कर रात के ११ बजे धारूहेड़ा ग्राम में पहुंचे। प्रातः काल ला० मथुराप्रशाद जी ने प्रथम बार ही श्री महाराज जी के दर्शन किये। दूसरे दिन ही श्री महाराज जी हम सब को साथ लेकर रामपुरा आ गये। राम जोहड़ी पर ही ठहरे। वहां कुछ सत्संग करके मैं भटिन्डा और ला०मथुरा प्रशाद जी देहली चले गये।

श्री महाराज जी कुछ काल तक वहां ही ठहरे। वहां बहुत सत्संग होने लगा। सत्संग में आने वाले सज्जनों से श्री महाराज जी राम जोहड़ी की मिट्टी छंटवाने लगे। मैं भी कभी स्वयं और कभी किसी सत्संगी को साथ ले कर श्री महाराज जी के सत्संग में आने लगा।

जब जर्मन का युद्ध प्रारम्भ हुवा राव साहब को गवर्नमेन्ट के बुलाने पर लड़ाई का काम सीखने के लिये

मेरठ जाना पड़ा। वहां पर जाकर वे बीमार हो गये उन्हें निमोनिया हो गया। बीमारी के कारण वे मेरठ से रामपुरा आगये। यहां आकर डाक्टरों से इलाज करवाया परन्तु कुछ लाभ न हुआ। डाक्टर और वैद्य सभी निराश हो गये। उन्ही दिनों मैं भी आश्रम में गया हुआ था। श्री महाराज जी ने मेरे से कहा भक्त रामपुरे जाकर राव साहब से कहना कि मन करे तो यहां आ जावें। उसी समय रामपुरा जाकर मैंने श्री महाराज जी का संदेश उन्हें सुना दिया। उन्होंने कहा मैं तो तड़फ रहा था तुम ने बड़ी अच्छी बात सुनाई। मैं आश्रम अभी चलूंगा। थोड़ी देर बाद ही राव साहब रथ में बैठ कर आश्रम आ गये। श्री महाराज जी ने उनका पलंग वृक्षों के नीचे खुली जगह में डलवा दिया। साधारण सा उपचार बता दिया। उसी उपचार से रावसाहिब को आराम होने लगा धीरे २ उन्हें पूरा आराम हो गया।

इसी बीच में श्री महाराज जी दादरी पधारे। वहां दयपुर वाली छत्रियों में कई दिन ठहरे। उस समय दादरी में प्लेग की बीमारी फैली हुई थी। श्री महाराज जी के सत्संग के प्रभाव से और उनकी आज्ञा से एक सेवासमिति बनाई गई। जिसमें पण्डित शिवनारायण, पं. सन्तकुमार

पं. भीमसेन, रघुनन्दन मिश्र, मास्टर हरवंश, राव घीसा राम आदि सज्जन थे। प्लेग के बीमारों की सेवा और अनाथों की दाहक्रिया ठीक ठीक होने लगी। इस सेवा समिति ने सेवा का बड़ा काम किया। इन सभी सज्जनों ने बीमारों की सेवा कार्य में किसी प्रकार की घृणा आदि और अपना बचाव नहीं किया। जितने सेवा करने वाले सेवक थे, किसी को भी यह बीमारी न हुई यद्यपि प्लेग की बीमारी लगने वाली होती है, पर यह सब उनकी सेवा तथा श्री महाराज जी की महान् कृपा थी। श्री महाराज जी दादरी से वापिस रामपुरा आश्रम में आगये।

अब, जहां पर रामसरोवर एक्का तालाब बना हुआ है, वहां पर पहिले एक छोटा सा पानी ठहरने का गड्ढा बना हुआ था। एक दिन श्री महाराज जी उस गढ़े के पास जाकर बैठ गये। मिट्टी खोदने की फावड़ी मंगाई। कहते हैं कि श्री महाराज जी ने स्वयं अपने हाथ से पांच फावड़ी मिट्टी खोदी। सत्संगियों से मिट्टी छंटवाने लगे। इस प्रकार मिट्टी खुदने लगी। वृक्ष लगने भी आरम्भ हो गये। उसी समय हम पांच सज्जनों ने श्री महाराज जी से प्रार्थना की कि यहां पर कोई देश सेवा का कार्य होना चाहिये। उन्होंने इस प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार

कर लिया। फिर क्या था, मकान बनाये जाने लगे।

बड़, पीपल, आंवला आदि नाना प्रकार के वृक्ष लगवाये गये। इसका नाम श्री महाराज जी ने श्री भगवद्भक्ति आश्रम रक्खा। आश्रम के मध्य में एक बहुत सुन्दर रामसरोवर जलाशय बनाया गया। हरिजन पाठशाला, कन्या पाटशाला ब्रह्मचर्याश्रम, नस्ल की गौशाला, औषधालय आदि आदि प्रवृत्तियां वहां चलने लगी।

सेठ जमनालाल जी बजाज की प्रेरणा से एक महिला मण्डल की स्थापना हुई। म. गांधी जी ने वर्धा आश्रम से मीरा बहिन (Miss Slade) और कई देवियां भगवद्भक्ति आश्रम में भेजी। वहां पर शिक्षा और निवास का बड़ा सुन्दर और आदर्श प्रबन्ध था। भक्तों की प्रेरणा से सत्संगी सज्जन श्री महाराज जी के दर्शनों के लिये आते थे। उनके सत्संग के प्रभाव और उनकी आज्ञा से उन्होंने मकान कूंवा आदि बनवाये, और भी उन्होंने तन मन धन से आश्रम की सेवा की, कई महानुभाव और देवियों ने तो अपना सारा जीवन ही आश्रम में लगा दिया।

श्री महाराज जी की कृपा और उनके प्रयत्न से

भ. भ. आश्रम ऐसा भव्य, सुन्दर और रमणीक बन गया कि यह अपनी तरह का एक ही आश्रम कहा जा सकता हैं। अब इस आश्रम को जो देखते हैं और विचारवान् विचार करते हैं तो प्रतीत होता है कि इसके बनाने वाले अवश्य ही कोई महान् योगी थे।

दादरी में मेरे पूज्य पिता ला.गणेशीलाल जी ने, जहां श्री महाराज जी आज्ञा देकर आये थे, वहांपर उसी स्थान में एक आश्रम बनाया। उसमें बहुत बड़ा मकान, कूंवां तालाब आदि बनवाये। बड़, पीपल, गूलर आदि बहुत से वृक्ष लगवाये। श्री महाराज जी कई बार दादरी के आश्रम में भी रहते थे। वहां पर बहुत सत्संग रहता था।

एक बार मैं रामराय, जीन्द के पास एक तीर्थ है, गया। वहां पर वहां के भक्तों ने ग्राम से बाहर मुझे एक हवेली दिखाई और यह बताया कि श्री महाराज जी चार मास अकेले इसी हवेली में रहे। उन्होंने एक निश्चित समय बता दिया था,उसी समय, एक आदमी चार मिस्सी रोटी और एक घड़ा पानी का लेजा कर किवाड़ खटकाता था। श्री महाराज जी किवाड़ खोल कर पानी और रोटी ले लेते थे और फिर किवाड़ बन्द कर लेते थे। इसके

बाद वहां न कोई आता था और न ही श्री महाराज जी बाहर निकलते थे।

एक बार श्री महाराज जी ने आश्रम के लिये अन्न लाने के लिये मुझे भेजा। मैं फूल मंडी (रामपुरा फूल) और पटियाला गया। पटियाले में याद आया कि सुनाम के ला. करताराम जी, फरीदकोट में माल अफसर थे, उन्होंने भटिन्डे में श्री महाराज जी की विचित्र बातें सुनाई थी। यह याद आते ही मैं सुनाम चला गया। मण्डी में अन्न भी किया और सुनाम शहर में ला. करता राम जी के मकान पर जा कर उनसे मिला। उन्होंने दो सज्जनों को बुलाया। एक बाबू चेतराम टिकट कलेक्टर, दूसरे एक थानेदार साहब, जिनका नाम मुझे याद नहीं बाबू चेतराम जी ने, जिनको मैं बहुत जानता था, ला. कर्तारम जी से कहा कि श्री महाराज जी की बातें सुनावो। उन्होंने कहा एक बार श्री महाराज जी नरवाना स्टेशन पर उतरे। उनके दर्शन करके मुझे बड़ी श्रद्धा हो गई, मैंने प्रणाम किया और कहा कि "कोई आज्ञा कीजिये"। श्री महाराज जी ने फरमाया कि हम कहीं ठहरना चाहते हैं। मैं भटिन्डे से बदल कर नरवाना आया ही था। मैंने कहा मेरे क्वार्टर में ठहर जावो। उन्होंने

फरमाया, हम ऐसे मकान में ठहरेंगे जहां और कोई भी सामान न हो। मैंने एक कमरा बिल्कुल खाली कर दिया। श्री महाराज जी उस में ठहर गये। एक छोटा सा बिस्तर ज़मीन पर ही लगा लिया। मैं स्टेशन पर अपनी ड्यूटी पर चला गया। जब मैं वहां से वापिस आया तो कुछ रात चली गई थी मैं श्री महाराज जी के पास गया और देखा तो श्री महाराज जी मुरदे जैसे प्रतीत हुए। मैं सब बातें देख कर अपने मन में डरा कि देखो नाहक में आफत आगई। प्रातः ही पुलिस आवेगी। मैं चिन्ता करता हुआ कमरे में जाकर लेट गया। परन्तु चिन्ता में नींद कहां। जब प्रातः चार बजे तब श्री महाराज जी भजन गाने लगे। मैं पास गया, तो उन्होंने कहा, क्या तुम डर गये थे? मैंने कहा हां जी। उन्होंने कहा डरने की कोई बात नहीं। श्री महाराज जी को प्रति रात्रि यह साधना करते मैं देखा करता था। इसी तरह श्री महाराज जी १८–२० दिन वहां रहे। फिर सुनाम जाने को कहा। मैंने ठहराने का प्रयत्न किया लेकिन वे नहीं ठहरे और सुनाम चले गये। सुनाम में श्री महाराज जी भाई मूला के डेरे में ठहरे। ला. करताराम आदि ने बताया कि हम सब श्री महाराज जी के सत्संग में जाते थे। बड़ा आनन्द रहता

था। हम लोग भोजन आदि भेजते थे तब भी कई कई दिन श्री महाराज जी नहीं खाते थे। अब थानेदार साहब कहने लगे मेरी भी सुनो। मैं एक दिन ग्राम को जाने के लिये बहुत सवेरे ही चल पड़ा। रास्ते में विचार किया कि श्री महाराज जी के दर्शन करता जाऊं, मैंने भाई मूला के डेरे में जाकर ऊपर कमरे में जहां स्वामी जी रहते थे, उसके किवाड़ खोले तो मैंने वहां श्री स्वामी जी को नहीं देखा। वहां पर एक सिंह को देखा। सिंह को देखते ही मैंने किवाड़ बन्द कर दिये और वहां से चला आया। उसी समय ला. करतारामं जी ने बताया कि एक दिन मेरा एक आदमी घी लेने को एक ग्राम में जाता था। वह भी श्री महाराज जी के सत्संग में जाया करता था उसने सुबह ही जब दर्शनों के लिये किवाड़ खोले तो उसने देखा कि श्री महाराज जी के हाथ, पैर, सिर अलग अलग हैं। और चारों तरफ एक सिंह घूम रहा है। वह झट किवाड़ बन्द करके चला आया।

इस तरह श्री महाराज जी की विचित्र साधना की बातें सुनकर, मण्डी में अन्न इकट्ठा करके, मैं वापिस रेवाड़ी आश्रम में आगया। श्री महाराज जी के पास कई सत्संगी बैठे थे। मैंने यात्रा की सब बातें श्री महाराज जी

को सुनाई। साथ ही सुनाम की घटना सुनाने लगा तो श्री महाराज जी ने अनसुनी करके सत्संगियों को भी उठा दिया। पालम के ला० यादराम जी ने जिनका नाम अब महात्मा दयानन्द जी है। सुनाया था, कि एक बार श्री महाराज जी पालम के अधबने मन्दिर में ठहरे थे। वहां पर एक बुल्लुराम रवाती रात के बारह बजे बाहर जंगल में गया था। उसने सोचा कि मैं शिवालय में श्रीमहाराज के दर्शन ही करता चलूं। जब वह श्रीमहाराज जी के पास गया तो उसने देखा श्री महाराज जी का सिर पैर, धड़ अलग अलग पड़े हुवे हैं। वह देखकर घबरा गया और वापिस घर आ गया। सुबह ही उसने एक जाट, जिसका नाम नेतराम था, उससे कहा। आज गाव में बहुत बुरा हुवा। शिवालय पर जो महात्मा ठहरे हुए थे उन्हे कोई मार गया। जाट ने कहा कैसा झूठ बोल रहा है। मैं अभी २ वहां से आ रहा हूं। वह तो बैठे २ भजन गा रहे हैं। उसी समय उन दोनों ने जाकर देखा तो श्री महाराज जी भजन गा रहे थे। जब उन्हों ने जाना कि ये तो कोई सिद्ध योगी है।

राव बहादुर बलवीर सिंह जी ने एक कोठी नई दिल्ली में बनाई थी। श्री महाराज जी जब कभी दिल्ली जाते

तो उस कोठी में ठहरते थे। श्री महाराज जी के सत्संग में श्री मदन मोहन मालवीय जी आते थे। सन् १९८५ के कहत (अकाल) में श्री महाराज जी ने, श्री मालवीय जी से कह कर एक आल इन्डिया काउ प्रोटेक्शन सोसाइटी, बनवाई। जिसके सभापति श्री मालवीय जी को बनाया। श्री मालवीय जी ने श्री राव साहब तथा भारत के अन्य बड़े २ आदमियों को उपसभापति, तथा पधदाधिकारी बनाये। जिन गो माताओं को लोग घरों से निकालते थे, उन्हें अकाल से, सुकाल की जगह भेजकर, बहुत सी उन अनाथ गौओं के प्राण बचाये। जिस समय गौओं को जमुना जी से पार करते थे, तब स्वयं श्री महाराज जी अपनी मोटर से वहां पहुंचते थे। भक्ति पत्रिका जो आश्रम से निकलती थी उसका विशेषांक श्री महाराज जी ने "गौ अंक" निकलवाया।

एक बार की बात है कि श्री महाराज जी गाड़ी (एक विशेष सवारी) में बैठे हुए आश्रम में घूम रहे थे। साथ में, मैं चल रहा था, उस समय वे मुझे कई महत्व की बातें समझा रहे थे। रास्ते में एक जांट (शमी) की टहनी झुक रही थी। उस टहनी का कांटा श्री महाराज जी की आंख में लग गया। उस समय तकलीफ हुई।

कुछ दिन में उसी आंख में मोतिया होगया। जगत्प्रसिद्ध डा. मथुरादास जी मोगे वालों ने आश्रम में ही आकर श्री महाराज जी की आंख का अपरेशन कर दिया। साथ ही सात रोगियों की आंख का अपरेशन किया। सात दिन बाद पट्टी खुलने पर वह सात अच्छे होकर अपने घर चले गये पर श्री महाराज जी की आंख में तकलीफ बहुत ज्यादा होगई। कई उपचार किये गये। पर आराम नहीं हुआ। सबने मिलकर मुझे डाक्टर साहब को दुबारा लाने के लिये मोगा भेजा। मैंने मोगा पहुंच कर सब हाल बताया। डा. साहब ने कहा मुझे तो छुट्टी नहीं है। मेरे भानजे डा. बज़ीरचन्द बड़े योग्य हैं इन्हें ले जावो। उसी समय मैं (भक्तजी) ने डाक्टर साहब से कहा कि आपने थोड़ी देर में सात अपरेशन किये हैं, दिन भर में तो आप बहुत आपरेशन कर सकते हो। क्या आप गरीबो के लिये समय दे सकते हैं? उन्होंने स्वीकार कर लिया। खर्च का उसी समय हिसाब लगा कर जहां (Guest House) अतिथिशाला में, मैं ठहरा था, वहां ही बैठ कर भगवान् से प्रार्थना की श्री महाराज जी की आंखों में आराम हो जावे, तो मैं बहुत गरीबों की आंखें बनवाऊँ।

मोगा जाते समय मैं दिल्ली में ला. बनवारीलाल

जी को कह गया था कि डा. सर्राफ को मेज देना। मौका ऐसा हुआ कि मैं मोगा से डा. वज़ीरचन्द जी को लेकर आश्रम में पहुंचा। दिल्ली से भी डा. सर्राफ उसी दिन आश्रम में पहुंच गये। दोनों डाक्टरों ने आकर देखा तो उन्होंने कहा कि आंख बिल्कुल ठीक है। कोई तकलीफ नहीं। मैंने श्री भूमानन्द जी से पूछा कि आंख में किस समय आराम हुआ। भूमानन्द जी ने बताया कल ५ बजे एकदम आराम होगया। यह वही समय था जब मैंने मोगा में बैठकर प्रार्थना की थी।

मैंने अपने निश्चय के अनुसार, श्री महाराज जी की आज्ञा लेकर, श्री रावसाहब, कई आश्रमवासी तथा दादरी की सेवा समिति के सहयोग से बहुत सी कठिनाइयों के होते हुए ता. २६ मार्च १९३३ चैत्र कृष्णा अमावस्या के दिन रेवाड़ी में पहला "चक्षुदान यज्ञ" आंखों का मेला किया। परिणाम बहुत अच्छा रहा। इसके बाद श्री महाराज जी दिल्ली पधारे। वहां सरदार धर्मसिंह की कोठी में ठहरे थे। ला. बनवारीलाल लोहिया की श्री महाराज जी के प्रति बड़ी श्रद्धा थी। वे अनुनय विनय करके अपनी हवेली में श्री महाराज जी को ले गये। श्री महाराज जी के साथ जो सेवक और सत्संगी थे उन सबके

रहने और भोजन का प्रबन्ध कर दिया। वहां पर सत्संग कीर्तन होने लगा। बनवारीलाल जी का लड़का बाल कृष्ण बीमार था। उसका बुखार उतरता ही नहीं था। बनवारीलाल ने श्री महाराज जी से प्रार्थना की। महाराज जी ने कहा गरम पानी में नमक मिलाकर कै करा देवो। उन्होंने बालकृष्ण से कही। लेकिन बालकृष्ण की श्रद्धा नहीं थी। उसने कै (उल्टी) नहीं की। कई दिन बीत गये। दुबारा फिर बनवारीलाल जी ने श्री महाराज जी से प्रार्थना की। बिचारा बड़ा चिन्तित रहने लगा। एक ही लड़का था। श्री महाराज जी ने वही उपचार फिर बताया। वह क्या करता। इसी तरह कुछ दिन और निकल गये। फिर एक दिन बनवारीलाल ने बताया कि डा. अन्सारी का इलाज हो रहा था। उन्होंने कहा मैं अपने सारे प्रयत्न कर चुका हूं। अब एक उपचार और बाकी है। वह यह है कि गरम पानी में नमक डाल कर उल्टियां करादी जावें। उसने कहा श्री महाराज जी कई दिन से यही उपचार बतला रहे थे। डाक्टर ने उसी समय वही उपचार किया और बालकृष्ण का बुखार उतर गया। बनवारीलाल को बड़ी प्रसन्नता हुई और श्रद्धा भी बहुत बढ़ी। उन्होंने श्री महाराज जी से पूछा कि इस उपलक्ष्य में मैं क्या करूं।

श्री महाराज जी ने फ़रमाया कि माघ मास अमावस्या को बड़ा भारी कीर्तन हो। जिसमें दिल्ली की कीर्तन मण्डलियां बुलाई जावें। दिल्ली के मन्दिरों के पुजारी तथा डेरों के सन्त बुलाये जावें। सबको निमंत्रित किया जावे।

श्री महाराज जी की आज्ञा अनुसार बड़े ज़ोरों का कीर्तन हो रहा था। उधर सन्त पुजारी आदि भोजन कर रहे थे। यकायक सब मकान हिलने लगे। यह, वही समय था जब बिहार में बड़ा विनाशकारी भूकम्प आया था। कीर्तन करने वाले कुछ सज्जन डर गये। और उठने लगे। श्री महाराज जी ने ज़ोर से गम्भीर वाणी में कहा कि घबराओ मत। खूब ज़ोर से कीर्तन करो। इससे सब लोगों को विश्वास होगया और अधिक भाव से कीर्तन होने लगा। थोड़ी देर बाद दिल्ली में जो भूकम्प का धक्का था वह समाप्त हो गया। भोजन, भजन रात तक चलता रहा। उसी रात को मैंने लाला शिव-नारायणजी भटनागर, सम्पादक वतन, रामनाथजी कालिया आदि सज्जनों को साथ में लिया। चक्षुदान यज्ञ की बातें तो पहिले हो चुकी थीं. उसकी एक मीटिंग की। उस मीटिंग में अपर इन्डिया ब्लाईंड रिलीफ एसोसियेशन

बनाई। बनवारीलाल जी ने आकर श्री महाराज जी को सुनाया कि बिहार में जहां जहां भूकम्प से बड़ी भारी हानि हुई है। वहां ही मेरे लोहे के १५ जगह कारखाने हैं। परन्तु आपकी कृपा से सब कारखाने बच गये, सिर्फ एक जगह ४ या ५ हज़ार की हानि हुई। इससे बनवारी लाल की श्रद्धा तो बढ़नी ही थी। दिल्ली में भक्त तथा बड़े २ साधू पुजारी पण्डितों आदि की भी श्रद्धा बढ़ गई। जब वहां बहुत भीड़ होने लगी तब श्री महाराज जी रेवाड़ी आश्रम में आगये। देहली में अपर इन्डिया ब्लाइन्ड रिलीफ एसोसिएशन जो बनाई थी। उस नाम से म. भ. आश्रम रेवाड़ी, वृन्दावन आदि कई जगह चक्षुदान यज्ञ किये। बोलो श्री सद्गुरुदेव की जय।

ग्रीष्म ऋतु में श्री महाराज जी शिमला पधारे। वहांपर भी उनके भक्त(मैंने)शान्तिकुटी में चक्षुदानयज्ञ रच दिया। उस में लेडी विलिंगडन भी आईं। आश्रमके कार्यकर्त्ता, देवियों और ब्रह्मचारियों की सेवा, डा. मथुरादास जी "पाहवा" के अपरेशन और यज्ञ का सब कार्य देखकर वह बहुत प्रभावित हुई। जहां श्री महाराज जी बैठे थे वहां जाकर खड़ी होगई। श्री महाराज जी से हाथ मिलाना चाहा। श्री महाराज जी बैठे रहे, कुछ भी नहीं बोले। पीछे भक्त

खड़ा था उसने कह दिया श्री महाराज जी हाथ नहीं मिलाते। इस पर उन्हें बड़ा क्रोध आया और आगे चली गई। वहां पर स्वयंसेविकाओं तथा स्वयंसेवकों द्वारा बीमारों की सेवा सुश्रुषा होते देखकर बड़ी खुशीहुई। उसीसमय सर गोकलचन्दजी नारंग ने उनको समझाया कि ये बहुत बड़े महात्माहैं। इनके हाथ मिलाने का रिवाज नहीं है आप पास जाकर उन्हें प्रणाम करो, और आशीर्वाद लो। तब फिर दुबारा आकर हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। श्री महाराज जी ने "जय नारायण" कहा। दुबारा फिर हाथ जोड़ कर कहा कि आप हमारे गवर्नर साहब को भी आशीर्वाद दीजिये। उत्तर में श्री महाराज जी ने पीछे खड़े हुए मुझ से कहा कि इन्हें गायत्री मंत्र की पुस्तक, जो अंग्रेज़ी में छपी है, दे दो। और उनसे कहा कि इस आंख के काम में आप अपना नाम दो। उन्होंने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक मान लिया। उस नाम से कई चक्षुदान यज्ञ किये।

शिमले से आकर कुरुक्षेत्र में चक्षुदान यज्ञ किया। वहां श्री महाराज जी स्वयं पधारे। कुछ कारण वश वहां पर आर्थिक संकट ऐसा आया कि श्रीमती भक्काणी जी ने अपने हाथ की चूड़ी भी सहर्ष उतार कर काम चलाने के लिये दे दी थी। जहां भी हम चक्षुदान यज्ञ करते थे

प्रायः बहुत सी जगह श्री भक्तानी जी अपनी पुत्रियों और और आश्रम की स्वयंसेविकाओं और स्वयंसेवकों को अपने साथ लेजा कर उन सबका भोजन आदि का प्रबन्ध स्वयं अपने खर्चे से आप ही करती थी। उन सब की सार सम्भार पूरी तरह रखती थी।

श्री महाराज जी सन् १९३५ में जीन्द के भक्तजनों की प्रार्थना पर वहां पधारे। उन लोगों की प्रार्थना पर वहां एक आश्रम स्थापित किया। इस शुभ कार्य के लिये भक्त कृष्णलाल व ला. सीताराम जी ने भूमि दी। इसमें नाना प्रकार के वृक्ष लगे। तालाब बन गया और मकान बनने आरम्भ होगये। इस प्रकार इसका नाम भी भगद्भक्ति आश्रम जीन्द रखा गया। जो इस समय दिनोंदिन उन्नति कर रहा है। सुन्दर और आदर्श स्थान है। साधू महात्मा भक्तजन आदि बड़े प्रेम से आश्रम की सेवा करते हैं। समय समय पर जन हितकारक समाज सेवा के कार्य भी होते रहते हैं। यह आश्रम भी देखने योग्य ही है। जीन्द में ही श्री महाराज जी ने मुझे आज्ञा दी, और उन की आज्ञानुसार मैंने अर्धकुम्भी के समय प्रयागराज में जाकर चक्षुदान यज्ञ का आयोजन किया। श्री महाराज जी आश्रम के कई स्वयंसेवक तथा सेविकाओं को लेकर

प्रयागराज पधारे। पर्व के समय श्री महाराज जी ने संगम के बीच में जाकर खूब गोते लगा कर स्नान किया। वहां चक्षुदान यज्ञ सानन्द सम्पन्न हुआ। वहां से आकर झुन्झुनु में चक्षुदान यज्ञ किया। वहां से श्री महाराज जी आश्रम रेवाड़ी आगये।

ग्रीष्म ऋतु आने पर श्री महाराज जी शिमला पधारे। उन्होंने जाने से पहिले कहा था देखो "हमें शिमला भेज कर रुपया भी खोवें और आदमी का आदमी खोवें" शिमला जाने के लिये श्री महाराज जी सत्संग भवन से पलंग पर ही नीचे उतरे। और कहा कि बोलो राम नाम सत्य है। किसी भक्तने उसी समय यह भी पूछा कि आप शिमले से कब वापिस आजायेंगे। श्री महाराज जी ने कहा कि "जिन्दा रहे तो आजावेंगे"। इन पहेलियों को उस समय कौन समझ सकता था। शिमला जाकर श्री महाराज जी ने एक सदाचार नामक पुस्तक लिखवाई, और कुछ नये भजन बनाये। श्री महाराज जी वहां पर कुछ अस्वस्थ्य होगये। यह कौन जानता था कि इस बार यह अन्तिम समय था। ज्यों ज्यों श्री महाराज जी के समाधिस्थ होने का समय नज़दीक आरहा था, त्यों त्यों ही उन्होंने अपनी शक्ति बाह्य पदार्थों से हटाली थी, और

अपने दशवें द्वार में वृत्ति को टिका कर, शान्त भाव से अनाथों के नाथ, दीनों के सहायक, ज्ञान की मूर्त्ति, जाखू के टीले पर धौलपुर हाउस में श्रावण कृष्णा पंचमी सं० १९९३ ९ जुलाई १९३६ को सायंकाल के आठ बजे, स्थूल शरीर को त्याग कर अपने निज रूप "परमानन्द" में समा गये।

उनके स्थूल शरीर को रेवाड़ी आश्रम में सत्संग के नीचे मंज़िल में बहुत प्रबन्ध के साथ समाधिस्थ किया गया। जहां उनकी समाधि है। अब उसके ऊपर उनकी मूर्त्ति (Statue) विराजमान् है।

सन् १९३० से ही ग्रीषम ऋतु में श्री महाराज जी शिमला जाया करते थे। वहां पर एक सत्संग सभा बनाई जिसमें हर सम्प्रदाय और सब मतान्तरों के बहुत से सज्जन शामिल हुए। गायत्री मंत्र का एक बहुत ही सरल, सुन्दर संक्षिप्त और स्पष्ट अर्थ लिखकर हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दु में लाखों प्रतियां छपवाकर वितरण करवाईं। श्री महाराज जी ने लिखवाया है कि इस गायत्री मंत्र में स्तुति उपासना और प्रार्थना तीनों बातें हैं। श्री महाराज जी आज्ञा देते थे कि कोई बहुत बड़ी सन्ध्या वन्दन न कर सके तो इस गायत्री मंत्र से सन्ध्या कर लिया करे। समय समय पर

श्री महाराज जी पत्र भी लिखवाया करते थे । कुछ अंश नीचे दे रहा हूं ।

भगवान् का भजन करो, कार्य पर दृढ़ रहो, कष्ट सहो. परमात्मा परमेश्वर पर खूब विश्वास करो, कभी हो तो उसको पूरा करने की भगवान् से प्रार्थना करो । सन्त, गौ, वृक्ष और भगवान् की भक्ति का प्रचार करो । सब से प्रेम पूर्वक नम्रता का बर्ताव करो । सब का सेवक अपने आप को समझना चाहिये । आपस में किसी का दुःख दर्द सुन कर उसके दुःख दर्द को दूर करने के लिये भगवान् से प्रार्थना करनी चाहिये । जैसा अपनी आत्मा को सुख दुःख होते हैं । वैसे ही दूसरे को समझ कर दुःख दूर करना चाहिये । परमात्मा अपने बाहर भीतर सब जगह छाया हुआ है । उसके सिवाय कुछ नहीं, ऐसी भावना किया करो । क्षण मात्र भी ऐसी भावना मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है । बहुत नींद आवे तब सोवो । बहुत भूख लगे तब खाओ । और यह समझो कि यह सब कुछ भगवान् की प्रेरणा से कर रहे हैं । विद्या पढ़ना परोपकार करना उत्तम कर्म है ।

श्री महाराज जी के समाधिस्थ होने के बाद श्री महाराज जी की आज्ञानुसार मैंने अपने निश्चय के अनुसार डा.

मथुरादास जी को चक्षुदान यज्ञ का गुरु मान कर, जगह जगह प्रचार करके कई स्थानों में चक्षुदान यज्ञ किये। भारतवर्ष में ऐसे मेले करने का रिवाज डाला। दो मेले "चक्षुदान यज्ञ" दिल्ली के पुराने (पाण्डु) किले में किये। जिनमें बहुत बड़ी संख्या में अन्धों को नेत्र दान मिला। यज्ञ के समय बड़ी बड़ी कठिनाईयां आई। पर भगवत्कृपा से सब दूर हो गईं। पुराने किले में जब हम यज्ञ कर रहे थे उस समय कुमार पाल जी आये थे। मैंने उनसे इस कार्य करने को कही। वे अस्वीकार कर ऋषिकेश चले गये। वहां उनको अचानक तकलीफ होगई और हार्ट फेल होने लगा। साधु महात्माओं की प्रार्थना से उनको आराम होगया। फिर महात्माओं के कहने से अपना जीवन इस चक्षुदान यज्ञ के कार्य में लगाने का विचार किया। उन्हों ने मेरे पास आकर सारी घटना सुनाई। और इसी कार्य में समय लगाने को कही। मैं इस लगन में था ही कि इस कार्य को सुव्यवस्थित और व्यापक रूप से किया जावे। इसकी एक संस्था बनाई जावे। एक बार मेरी श्री जुगल किशोर जी बिरला से, देहली में, संस्था बनाने की पक्की बात होगई थी, पर दैवयोग से, उस समय न बन सकी थी। अब मैंने यह सुअवसर देखकर, ५०००) रुपया प्रारम्भिक खर्च के लिये कुमारपाल जी को दिलवाकर श्री

गुरु महाराज के नाम पर सन् १९४१ में सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन की स्थापना आनन्द पर्वत पर देहली में की। इसका सभापति मुझे बनाया, मंत्री कुमारी कमला देवी, मैनेजर श्री कुमार पाल जी बनाये। कुछ आश्रम के कुछ अन्य सदस्य बनाकर इस संस्था का कार्य प्रारम्भ किया। युद्ध के कारण अमेरिकन फौजें आनन्द पर्वत पर आगई। इसलिये आनन्द पर्वत छोड़ कर संस्था का काम करोल बाग देहली में लाना पड़ा। धीरे २ यह कार्य सुचारु रूप से चलने लगा। और बहुत बढ़ गया। इस कार्य में श्री नवल किशोर, श्री भूमानन्द जी और श्री रामनर सिंह जी हर लाल काफी सहयोग मिला। प्रान्तीय सरकारें भी इस कार्य का बड़ा सहयोग देकर अपने अपने प्रान्तों में चक्षुदान यज्ञ कराने लगी। प्रायः सारे भारत वर्ष में बहुत बड़े पैमाने पर "चक्षुदान यज्ञ" होने लगे। जिन में हजारों गरीब अन्धों को नेत्र मिलने लगे। देहली में भी उसी समय इसी नाम से आंखों का हस्पताल बनाया। इससे सेवा का दोहरा कार्य होने लगा। श्री. भ. भ. आश्रम रामपुरा में जो चक्षुदान यज्ञ कई साल तक हुये उन में खास कर श्री भूमानन्द तथा और सभी आश्रम वासियों के सहयोग से होते थे।

उन्ही दिनों एक सज्जन ने, प्रेम से कहा, कि इस संस्था में घर के ही सभापति, घर के ही मंत्री, और घर के ही मैनेजर हैं। मैंने अपनी प्रन्नता से सभापति पद से त्याग पत्र देदिया। श्री जुगल किशोर जी बिराला को सभापति बनाया इस के कुछ समय पीछे दिवगत श्री कृष्णदास जी जाजू से विचार विमर्श करके सन् १६४७ में इस संस्था, सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन का सब कार्य बना बनाया श्री जुगल किशोर जी विरला को सौंप दिया। और श्री जाजू जी की सलाह से विधान में सुधार करके उसी समय उसी सभा में पास कराया। और श्री जाजू जी को उप सभापति बनाया। उसी समय बिरला जी से निम्नलिखित ३ बातों का आश्वासन लिया।

१. तस संस्था का नाम सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन जो अब हैं वही रहेगा।

२. इस संस्था में नवसिखिये (सीखदड़) डाक्टर आपरेशन नहीं करेंगे।

३. रिश्वत लेने वाले कार्यकर्त्ता इस संस्था में नहीं रहेंगे। क्योंकि बहुत कठिनाईयों और आपत्तियों को सहन करके श्री गुरु महाराज के नाम पर एक आदर्श संस्था बनाई

है। जब से अब तक इस संस्था का कार्य श्री बिरला जी की देख रेख में सुचारु रूप से चल रहा है।

यद्यपि श्री महाराज जी स्थूल शरीर से अब नहीं हैं, परन्तु हमारी यह निश्चित धारणा है कि अपनी अलौकिक दिव्य शक्ति द्वारा सर्वदा हमारे रक्षक और पथ प्रदर्शक रहें गे। श्री महाराज जी ने अन्त समय में दो भजन लिखवाये हैं, वे नीचे लिख रहें हैं। जिनसे पाठकगण विचारेंगे कि श्री महाराज जी उस समय कितनी ऊंची अवस्था में थे।

ममात्मा परमात्मा शिवात्मा विश्वस्वरूप
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योतिस्वरूप
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप
सुखात्मा चिदात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप
भावात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरूप
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप ॥
लहरा रही है ज्योति चिदानन्द की ॥

सब ब्रह्माण्डों के पृष्ठ भाग। सत्तास्फूर्ती सबको दे रही है निजानन्द की ॥

सारे विश्व के बाहर भीतर हृदयकमल में सूर्यमण्डल में
जगमगा रही है ज्योति महानन्द की ॥

ये संसार असार है अन्तिम एक ज्योति है अखण्डानन्द की।

सूर्य चांद विद्युत और तारे अग्नि ज्योति है भवानन्द की ॥
ज्योति विना कुछ और नहीं है अहं ज्जोति है ज्ञान यही है ॥
अहं ब्रह्मास्मि ज्ञान की ज्योति जगरही है घट घट परमानन्द की ॥

श्री महाराज जी ने गायत्री मंत्र का जो अर्थ किया है। एक गायत्री मंत्र स्वयं बनाया है और उसका जो अर्थ किया है, वह सब नीचे दे रहें हैं।

ओं भूर्भुवः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गोदेवस्यधी महिधियो योनः प्रचोदयात् ॥

ओं=सर्वव्यापक और रक्षा करने वाला, भूः=सत्यस्वरूप, भुवः=चैतन्य स्वरूप, ज्ञान स्वरूपः स्वः=सुखस्वरूपः तत्=वह सारभूत अनन्त परमात्माः सवितु=सबको उत्पन्न करने वाला, सबका संहार करने वाला, सबकी रक्षा करने वाला, सबको प्रेरणा करने वाला; वरेण्यम्=वर्णन करने योग्य, ग्रहण करने लायकः भर्गो=सब पापों को भर्जन नाश करने वाला, शुद्ध तेजः स्लरूपः देवस्य=प्रकाश और आनन्द के देने वाले दिव्यस्वरूप ऐसे परमात्मा काः धीमहि=हम सब ध्यान करते हैंः धियः=बुद्धियों कोः यः=वह परमात्माः नः हमारीः प्रचोदयात्=धर्मार्थकाम मोक्ष में प्रेरणा करे, संसार से हटाकर अपने स्वरूप में लगावे, शुद्ध बुद्धि प्रदान करे।

यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यं तदुपास्महे ।
तत्तवत्तेजोऽस्माकं बुद्धिः श्रेयस्करेषु नियोजयेत् ॥

हे तेज पुंज ज्योति स्वरूप परमात्मन् । ज्ञान और आनन्द के देने वाले । विजय कराने वाले । प्रार्थना और स्तुति करने योग्य, सबको उत्पन्न करने वाले, सबका संहार करने वाले, सबकी रक्षा करने वाले, सबको प्रेरणा करने वाले, अनन्त अपार, आनन्द स्वरूप, ज्ञान स्वरूप, परमात्मन् ! हम तुम्हारा ध्यान करते हैं । तुम्हारे गुण हममें प्रकट हों, और हम तुमको प्राप्त हों. जो तुम हो सो ही हम हैं, और जो हम हैं सोई तुम हो, ऐसे ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र धर्मार्थ काम और मोक्ष में प्रेरणा करो । सबको हम अपना ही आत्मा समझें । और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों । भीतर काम क्रोध इत्यादि और बाहर हमारी उन्नति में बाधक विघ्नकारक शत्रू सब नष्ट हों । जिससे आनन्द पूर्वक हम आपको प्राप्त हों । धन्यवाद पूर्वक हमारी आपको नमस्कार हो । हमारी रक्षा करो । एक मात्र आप ही हमारे रक्षक हो ।

श्री महाराज जी ने मंत्र का माहात्म्य लिखवाया है ।

इस मंत्र को जो श्रद्धा भक्ति पूर्वक जपेगा उसे अवश्य

मेव भगवान् के दर्शन होंगे । मोक्ष मिलेगी, कल्याण होगा, सब पापों का नाश होगा, मनोकामना पूरी होगी, पुत्र के इच्छुक को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, रोगी को निरोगता, विजय चाहने वाले को विजय प्राप्त होगी । सिद्धि चाहने वाले को सिद्धि, रिद्धि चाहने वाले की रिद्धि विद्या चाहने वाले को विद्या, भक्ति चाहने वाले को भक्ति, प्रेम चाहने वाले को प्रेम, और प्रेम का आश्रम परमात्मा प्राप्त हो जायगा इसमें सन्देह नहीं है ।

श्री महाराज जी ने बहुत से भजन स्वयं बनाये हैं और सूरदास, मीरबाई, कबीर जी आदि बड़े २ भक्त कवियों के भजन संग्रह करके सत्य शब्द संग्रह आदि कई पुस्तकें छपवाईं । श्री महाराज जी के बनाये हुए भजनों में कुछ नीचे दे रहे हैं ।

गुरु महिमा

उनके सत्संग में जब भी हम जाते थे,
मीठी वाणी से सत्कार करते थे वो,
करुणा दृष्टि से चिन्तायें हरते थे वो,
भाग दिल से हमारे सारे गम जाते थे ॥१॥

कैसा अद्भुत विलक्षण था उनका कथन,
शान्त हो जाते वहां जाके हम सबके मन,
भाग द्विविधा भरम एक दम जाते थे ॥२॥
प्रबल युक्तियां थी मनोहर वचन,
उनके उपदेश से भगवत में लगती लगन,
शब्द सद्गुरु के नस २ में रम जाते थे ॥३॥
करते हरी कीर्तन खुद कराते हमें,
शब्द द्वारा अलख को लखाते हमें,
घन की नाईं बरस करके थम जाते थे ॥४॥
परोपकार सम्बन्धी होती जो बात,
उसको स्वीकार करते थे तज पक्षपात,
ऐसी बातों पै फौरन ही जम जाते थे ॥५॥
करते निन्दा किसी की न स्तुति बड़ी,
शान्त और मग्न थे रहते वो हर घड़ी,
मोहन खण्डन के मार्ग में कब जाते थे ॥६॥

श्री सद्गुरु की वाणी

दोहा—ओइम निरञ्जनं दुख भंजनं रंकार ओंकार।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलख सर्वाधार॥
ओ३म् निरञ्जन रंकार प्रभु सोऽहं सत्य नाम कर्तार।

अच्युत गुरु गोविन्द दातार परमानन्द रूप निरधार॥
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार, तुमरी ज्योति का उजियार।
मैं मैं मैं पन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार॥
एक आत्म अपरम्पार, शंकर ब्रह्म सर्व का सार।
ओत प्रोत सबमें निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार॥
हरि नारायण आगू तार, देव देव में करहु पुकार।
कृष्णानन्ता उचलहं गौड़ हूँ, फट अल्ला सर्व पसार॥
विनवो तुमको बारम्बार, प्रीतम प्यार करो उद्धार।
तद्धन गणपति नैन मंझार, होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार॥

★ श्री गुरुशरणम् ★

ईश्वर तू है सबका स्वामी क्षमा सिन्धु उर अन्यामी।
महिमा तेरी अपरम्पार तुझ से गये वेद भी हार
तूने सारा जगत बनाया अनुपम दृश्य हमें दिखलाया
सूरज तारे चान्द बनाये जल थल अनल पवन प्रकटाये
न्यायी सत्य सिन्धु सुखखान करुणा निधि तू है बलवान्
दानी ध्यानी घट २ वासी तूं है निविकार अविनाशी
जीना मरना तेरे हाथ अधः पतन उन्नति तव साथ
यश अपयश का तू ही दाता रूप न तेरा जाना जाता

चींटी से हाथी तक सारे जितने जीव जन्तु बेचारे
देकर सबको दाना पानी रखता तू इन पर निगरानी
राई को पर्वत कर देता पर्वत राई कर धर देता
नगरों को तू निरजन करता बन में नगरी सिरजन करता
ब्रह्मादिक तव ध्यान लगाते नारदादि मुनिवर गुण गाते
गाते गाते वे थक जाते तो भी पार न तेरा पाते
हे ईश्वर हे सर्वाधार महिमा तेरी अपरम्पार
हमरी रख लीजे प्रभू लाज विनय यही करते हम आज
हे प्रभू रक्षा करो हमारी हम आये हैं शरण तुम्हारी
निश दिन के अपराध हमारे क्षमा करो करुणानिधि सारे

भक्ति अपने पद कमल की दीजिये हरि दीजिये
चरण सेवक आप अपना कीजिये हरि कीजिये
अनगणित यह वस्तुऐं प्रभू आपने का हैं प्रदान
ज्ञान की शक्ति हमें हरि दीजिये हरि दीजिये
हे स्वामी चरणों में तुम्हारी कोटि वार प्रणाम है
दास हमको आप अपना कीजिये हरि कीजिये।

★★

म्हारे प्रेम विरह के वाण लगेंगे काहू हरिजन के॥
माया वस हो रहा अज्ञानी,

जिनके सत्गुरु लगे नहीं कानी
चुवक २ रह जाय हथोड़ी जैसे घन पटके
धन सम्पति में फिरत घुलाया
गुरु का शब्द नहीं चित लाया
अन्त समय पछताये नर्क में लटके ।
विरही की तो विरही जाने
बेदरदी नहीं पीड़ पिछाने
फटा कलेजा जाय, बींध गया सब तनके ।
जो दीखे सो रूप हमारा,
अलख लखे सो ही लखने हारा,
रोम रोम के बीच एक हुवा हरि चमके ।
शुद्ध सच्चिदानन्द अभाया,
औंकार अज ध्यान लगाया,
परमानन्द प्रकाश हुआ गया जम नसके ।

हमारे प्रभू एक तुम्हीं औंकार ॥
माता पिता गुरु बन्धु सहोदर
धन विद्या परिवार ॥
मन बल बुद्धि प्राण तुम्हीं हो
नयनन के उजियार ॥

हरि होकर हरे रंग में दीसो
पत्र पुष्प फल डार ।
धरती आकाश शशि और तारे
बिजली में चमकार ।
तुम ही सूरज में हो गरजो
वर्षा अमृत धार ।
ऊपर नीचे पर्वत सागर
सब तुम अपरम्पार ।
एक धुनी हो तुम से सबकी
तुमरा वार न पार ।
सुन्दर शक्ति विकास शुद्धता
हमको दे दातार ।
काम क्रोध मद लोभ निवारो
परमानन्द दो प्यार ।

ब्रह्म का है आनन्द स्वरूप ।
निराकार निर्विकार निरंजन ज्योति स्वरूप अरूप ।
अधः उर्ध्व दायें और बायें एक अखंड अनूप ।
आनन्द को सब चाहें प्राणी कहा रंक कहा भूप ।
एक ही परमानन्द विराजे नहीं छाया नहीं धूप ।

में वारी जाऊं सतगुरु की मेंरो कीयो भरम सब दूर ॥
प्यालो प्यायो प्रेम का घोर सजीवन मूरि ।
चढ़ी खुमारी नाम की हो गई चकनाचूर ॥
विमल आकाश प्रकाश में लख्यों बिना शशि सूर ।
मग्न भयो मन गगन ये सुन कर अनहद तूर ॥
ममता घट समता बढ़ी उर अन्तर भरपूर ।
राग द्वेष मन से मिटे अब मन भयो मजूर ॥
शब्द सुनत यमदूत के मुख में लागी धूर ।
आप मिले धर्मदास को सत्गुरु हाल हजूर ॥

दीनानाथ दयानिधि स्वामी कौन भांति मैं तुम्हें रिझाऊं ।
श्री गंगाचरणन् से निकसी शूचो नीर कहां से लाऊं ।
काम धेनू कल्पवृक्ष तुम्हारे कौन पदार्थ भोग लगाऊं ॥
चार वेद तुमरे मुखसे भाखे और कहा प्रभू पाठ सुनाऊं ।
अनहद बाजे बजत तुम्हारे ताल मृदंग क्या शंख बजाऊं ॥
कोटिभानु थारे नखकी शोभा दीपक ले प्रभू कहा दिखाऊं ।
लक्ष्मी थारे चरण की चेरी कौन द्रव्य प्रभू भेंट चढ़ाऊं ॥
सूरश्याम प्रभू विपत विडारन मन वांछित फल तुमहीसे पाऊं ॥

प्रभु जी मेरे अवगुण चित ना धरो ।
सम दर्शी है नाम तिहारो चाहो तो पार करो ।

एक नदिया एक नाल कहावत मैलो ही नीर भरो ।
जब मिल गयो तब रूप एक भयो गंगा नाम परयो ।।
एक लोहा पूजा में राख्यो एक घर बधिके परयो ।
ऊंच नीच पारस नहीं जाने कंचन करत खरयो ।।
अबकी बेर मोहे नाथ उबारो नहीं प्रण जात टरयो ।
यह माया भ्रम जाल निवारो सूर दास सगरयो ॥

हर हर महादेव

बोलो श्री सद्गुरू देव की जय ।।

॥ इति ॥

पुस्तक मिलने का पता :–

गोदावरी देवी कमला देवी
C/o जगत राम मिलखी राम
भटिन्डा (नव पंजाब)

सुभाष मित्तल प्रैस हस्पताल रोड, भटिन्डा में छपी ।

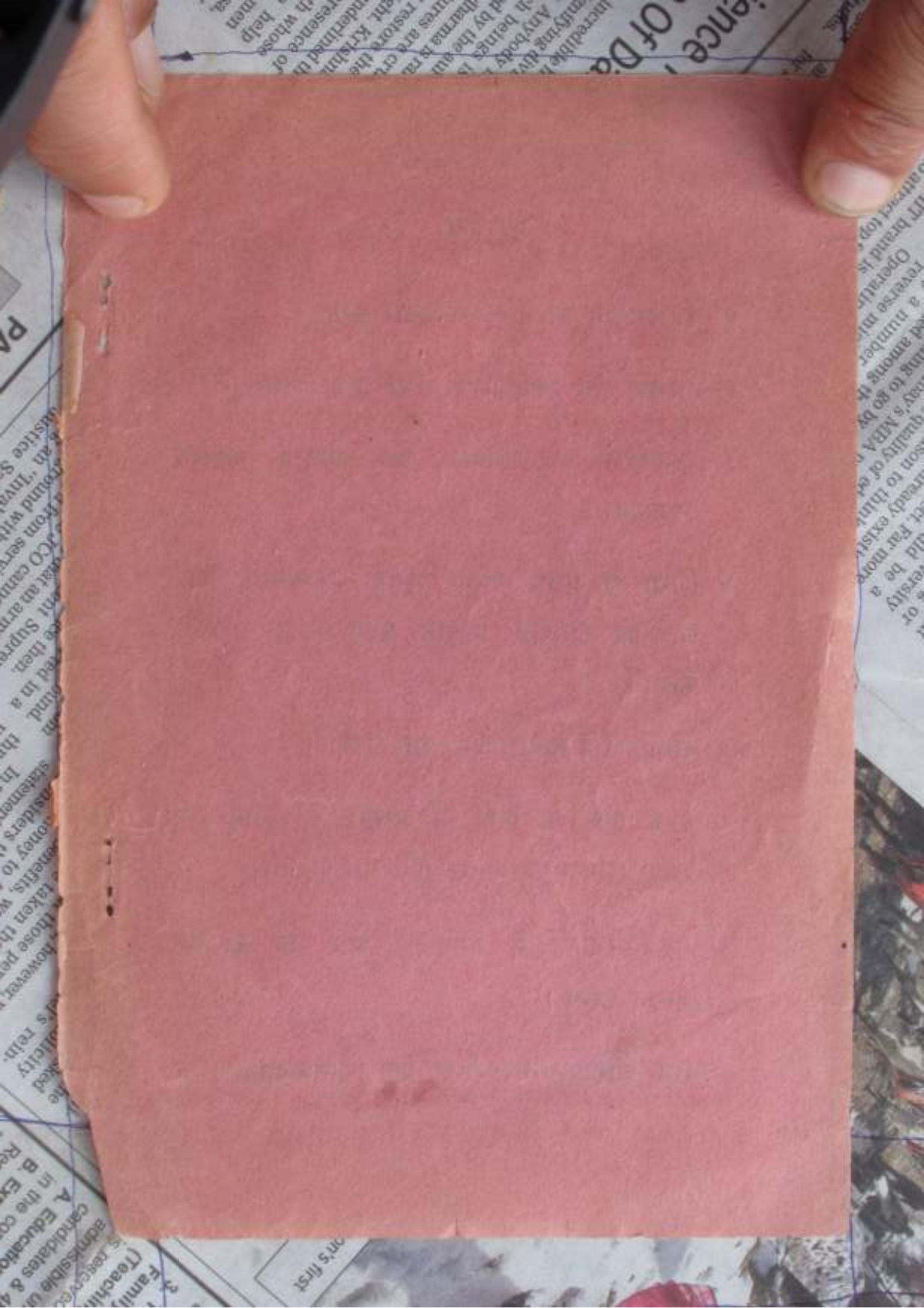

उद्देश्य

१–श्री भगवान् की भक्ति का प्रचार करना।

२–गौरक्षण और उसके लिये गोचर भूमि छुड़ाना।

३– जंगलों में वृक्ष लगवाना और बीच में जलाशय बनवाना।

४–शिक्षा का प्रचार करना जिसमें मनुष्यमात्र विद्या-लाभ कर सकें और प्राचीन प्रथा का फिर प्रचलित करना।

५–बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।

६–आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७–सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जागृत करना।

८–राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।